पाठ ०५ : आखिरी चट्टान तक (मोहन राकेश)

खंड १: त्रिसमुद्र संगम, विवेकानंद चट्टान और विराट चेतना का बोध

कठिन शब्दार्थ

- **स्याह:** काला, गहरे काले रंग की चट्टानें
- **समाधिस्थ:** समाधि में स्थित, ध्यानमग्न या पूरी तरह शांत
- **क्षितिज:** वह काल्पनिक स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं
- **चेतना:** बुद्धि-विवेक, होश या आंतरिक सजगता
- **सिहरन:** भय या अत्यधिक ठंड/रोमांच के कारण होने वाली शारीरिक कँपकँपी

सरल व्याख्या

यात्रा-वृत्तांत के इस प्रारंभिक अंश में लेखक मोहन राकेश जी भारत के अंतिम दक्षिणी छोर, कन्याकुमारी के विहंगम दृश्य का वर्णन करते हैं। लेखक केप होटल के समीप बने बाथ टैंक के बाईं ओर समुद्र के भीतर से उभरी हुई काली चट्टानों पर खड़े हैं। वहाँ से वे अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी के मिलन-स्थल (त्रिसमुद्र संगम) को निहार रहे हैं। इस संगम के बीच में वह ऐतिहासिक चट्टान स्थित है जहाँ कभी स्वामी विवेकानंद ने बैठकर गहन समाधि लगाई थी। वह चट्टान निरंतर उठने वाली समुद्री लहरों की मार सहते हुए भी बिल्कुल अडिग और समाधिमग्न प्रतीत होती है।

समुद्र की विशाल लहरें जब नुकीली चट्टानों से टकराती हैं, तो पानी की बूँदें चूरे के रूप में बिखरकर एक सुंदर जाली का निर्माण करती हैं। इस असीम जलराशि को देखकर लेखक अपनी संपूर्ण आंतरिक चेतना से महसूस करते हैं—"शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" अर्थात प्रकृति का यह फैलाव साक्षात् ईश्वर की अनंत ऊर्जा का ही रूप है। लेखक इस विराट सौंदर्य में इतने खो जाते हैं कि वे भूल जाते हैं कि वे एक यात्री या दर्शक हैं। वे स्वयं को उस विराट दृश्य का एक छोटा सा हिस्सा (चट्टानों के बीच एक छोटी चट्टान) महसूस करने लगते हैं। अचानक जब समुद्र का बढ़ता पानी उनकी चट्टान को घेर लेता है, तो वे चौंककर होश में आते हैं और अपनी जान बचाने के लिए सुरक्षित चट्टानों से होते हुए किनारे की तरफ भागते हैं।

खंड २: सैंड हिल की यात्रा, अनवरत टीलों का संघर्ष और चोटी फतह करने का सुख

कठिन शब्दार्थ

- **ओट:** आड़, परदा या किसी वस्तु के पीछे छिपने की स्थिति
- **कैनवस:** चित्रकारी करने का बड़ा कपड़ा, यहाँ विस्तृत प्राकृतिक परिदृश्य के लिए प्रयुक्त

- **झुरमुट:** पास-पास उगे हुए पेड़ों या झाड़ियों का समूह
- **बीहड़:** ऊबड़-खाबड़, दुर्गम, विकट या वीरान स्थान
- **सर करना:** किसी कठिन चोटी या लक्ष्य को पार करना या उस पर विजय पाना

सरल व्याख्या

लेखक कन्याकुमारी के प्रसिद्ध सूर्यास्त को देखने के लिए पश्चिमी तट की ओर चलना शुरू करते हैं। उन्हें दूर रेत का एक ऊँचा पीला टीला दिखाई देता है, जिसे वहाँ के लोग 'सैंड हिल' (बालू का टीला) कहते हैं। वहाँ सैलानियों की टोलियाँ एकत्र हैं, जिनमें नवयुवतियाँ, नवयुवक और गांधी टोपी पहने हुए लोग शामिल हैं। सरकारी गेस्ट हाउस के कर्मचारी वहाँ लोगों को कॉफी परोस रहे हैं, जिससे वह पूरा वातावरण अत्यंत रंगीन और सजीव जान पड़ता है। हवा के झोंकों से युवतियों के रेशमी वस्त्रों में भी समुद्र जैसी लहरें उठ रही हैं।

परंतु लेखक को सैंड हिल से सूर्यास्त देखने में एक बाधा महसूस होती है—अरब सागर की ओर स्थित एक दूसरा ऊँचा टीला पूरे विस्तार को ओट (आड़) में लिए हुए था। पूर्ण सूर्यास्त का अनिरुद्ध दृश्य देखने की तीव्र इच्छा के कारण लेखक अकेले ही रेत पर अपने कदमों को घसीटते हुए आगे बढ़ने लगते हैं। जब वे उस टीले पर पहुँचते हैं, तो पाते हैं कि आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला खड़ा है। इस प्रकार वे थकती हुई टाँगों के बावजूद, मन के अटूट उत्साह के बल पर एक के बाद एक कई टीलों को पार करते जाते हैं। अंततः एक सर्वोच्च टीले पर पहुँचकर उन्हें पश्चिमी क्षितिज का वह असीम खुला विस्तार दिखाई दे जाता है जहाँ से रेत की एक लंबी ढलान सीधे समुद्र में उतरती है। अपने इस कठिन प्रयास की सफलता से संतुष्ट होकर लेखक वहाँ बैठ जाते हैं और उन्हें ऐसा गौरवपूर्ण अहसास होता है मानो उन्होंने संसार की सबसे ऊँची चोटी को पहली बार फतह (सर) कर लिया हो।

खंड ३: सूर्यास्त के रंगों का सम्मिश्रण, रात्रि का भय और जादुई बहुरंगी रेत

कठिन शब्दार्थ

- **लहू बहना:** सूर्यास्त के समय आकाश और पानी का लाल रंग में रंग जाना
- **सुरमई:** हल्का नीला या सुरमे के जैसा गहरा धूसर रंग
- **सिर धुनना:** शोक, पश्चाताप या अत्यधिक दुख के वेग से सिर पीटना
- **सम्मिश्रण:** दो या दो से अधिक वस्तुओं या रंगों का आपस में मिलना
- **कँपकँपी:** अत्यधिक भय या ठंड के कारण शरीर का काँपना

सरल व्याख्या

टीले पर बैठकर लेखक सूर्यास्त के बदलते हुए अद्भुत रंगों के साक्षी बनते हैं। सूर्य का गोला जैसे ही समुद्र की सतह को छूता है, पूरी जलराशि पर चारों ओर सोना (सुनहरी किरणें) बिखर जाता है। परंतु यह रंग इतनी तेज़ी से बदलता है कि

उसे कोई एक नाम देना असंभव है। देखते ही देखते वह सुनहला रंग गहरे लाल रंग (लहू जैसी आभा) में बदल जाता है और कुछ ही पलों में वह लाल रंग बैंजनी और फिर पूरी तरह काले रंग में परिवर्तित हो जाता है। हवा के गूँजने और रात का अँधेरा छाने पर दूर खड़े नारियल के पेड़ ऐसे डरावने प्रतीत होते हैं मानो वे स्याह पड़कर अपना सिर धुन रहे हों।

अचानक लेखक को बोध होता है कि उन्हें इस वीरान जगह से वापस होटल भी लौटना है। अँधेरा घिर आने के कारण उनके शरीर में कँपकँपी छूट जाती है। टीलों के रास्ते वापस जाने पर रेत में भटकने का भयंकर डर था, इसलिए वे तुरंत निर्णय लेते हैं और सीधे नीचे समुद्र तट की तरफ फिसल जाते हैं, क्योंकि तट का रास्ता निश्चित रूप से केप होटल तक ले जाता था। तट पर पहुँचकर लेखक वहाँ की जादुई रेत को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। उन्होंने सुरमई, खाकी, पीली और लाल रंगों की रेत तो देखी थी, परंतु यहाँ की रेत में अनाम रंगों के अनगिनत सम्मिश्रण थे—जैसे काली घटा और लाल आँधी को मिलाकर किसी ने रेत के कणों में ढाल दिया हो। लेखक का मन था कि वे हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत बटोर लें, परंतु समुद्र का बढ़ता पानी तट की चौड़ाई को कम कर रहा था। लहरें उनके पैरों को भिगोने लगीं, जिससे खतरे का अहसास हुआ और वे जूता हाथ में लेकर तेज़ी से दौड़े तथा एक ऊँची चट्टान की नोकों पर पैर रखते हुए सुरक्षित सड़क की तरफ कूद गए।

खंड ४: विवेकानंद चट्टान की साहसिक यात्रा, बेकारी के आँकड़े और कडल-काक पक्षी

कठिन शब्दार्थ

- **मल्लाह:** नाव चलाने वाला, केवट या नाविक
- **चेतना स्थगित करना:** डर के मारे अपने होश-ओ-हवास को रोक लेना या सुन्न हो जाना
- **बे-लाग:** निष्पक्ष, दो टूक या बिल्कुल उदासीन रहना
- **अर्घ्य देना:** पूजनीय सूर्य देव को जल अर्पित करने की धार्मिक क्रिया
- **कडल-काक:** समुद्र में तैरने वाले जल-पक्षियों की एक विशिष्ट प्रजाति

सरल व्याख्या

अगली सुबह लेखक आठ अन्य लोगों के साथ एक अत्यंत आदिम और कमज़ोर नाव (जो रबड़ के पेड़ के तीन तनों को जोड़कर बनाई गई थी) में बैठकर तट से सौ-सवा सौ गज दूर समुद्र के बीच 'विवेकानंद चट्टान' की ओर निकलते हैं। समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरों और नुकीली चट्टानों के बीच से जब मल्लाह नाव को ले जा रहे थे, तो लेखक डर के मारे अपनी चेतना को स्थगित (सुन्न) करने का प्रयास कर रहे थे और अपने भय को दिखावटी उदासीनता से छिपा रहे थे। चट्टान पर पहुँचने के बाद भी डर के कारण उनकी टाँगें हल्के-हल्के काँप रही थीं।

वहाँ उनकी मुलाकात कन्याकुमारी के स्थानीय नवयुवकों से होती है, जिनमें से एक ग्रेजुएट है। वह शिक्षित नवयुवक लेखक को वहाँ की भयंकर सामाजिक-आर्थिक समस्या—'बेरोज़गारी' से परिचित कराता है। वह बताता है कि कन्याकुमारी की आठ हज़ार की आबादी में चार-सौ से पाँच-सौ शिक्षित नवयुवक पूरी तरह बेकार हैं, जिनमें से सौ के

लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य काम केवल नौकरियों के लिए आवेदन देना और आपस में बहस करना है। वह स्वयं पेट पालने के लिए फोटो-एल्बम बेचता है। वह व्यंग्य में कहता है कि "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं, इस चट्टान से हमें इतनी ही प्रेरणा मिलती है"। दूसरी तरफ, घाट पर अमीर सरकारी मेहमान दूरबीन (बाइनाक्यूलर्ज) से सूर्य-दर्शन कर रहे हैं और स्थानीय लड़कियाँ उन्हें शंख-मालाएँ बेच रही हैं। समुद्र में तैर रहे 'कडल-काक' पक्षी इन मानवीय समस्याओं और बेकारी के आँकड़ों से पूरी तरह बे-लाग (उदासीन) होकर तैर रहे हैं। अंत में, मंदिर की घंटियाँ बजती हैं और लेखक आँखों से दूरी नापते हुए वापस लौटने के लिए बसों का टाइम-टेबल मन ही मन दोहराने लगते हैं।